एकविंशः श्लोकः

तत्राघमर्षणं नाम तीर्थं पापहरं परम् ।
उपस्पृश्यानुसवनं तपसातोषयद्धरिम् ॥२१॥

पदच्छेद

तत्र अघमर्षणम् नाम तीर्थम् पाप हरम् परम् ।
उपस्पृश्य अनुसवनम् तपसा अतोषयत् हरिम् ॥

शब्दार्थ

तत्र	१. वहाँ	उपस्पृश्य	६. प्रजापति दक्ष उसके पास में जाकर
अघमर्षणम् नाम	३. अघमर्षण नाम का	अनुसवनम्	७. स्नान-सन्ध्या आदि
तीर्थम्	५. तीर्थ है	तपसा	८. तपस्या के द्वारा
पाप हरम्	२. पापों को नष्ट करने वाला	अतोषयत्	१०. आराधना करते थे
परम् ।	४. श्रेष्ठ	हरिम् ॥	९. भगवान् विष्णु की

श्लोकार्थ—वहाँ पापों को नष्ट करनें वाला अघमर्षण नाम का श्रेष्ठ तीर्थ है। प्रजापति दक्ष उसके पास में जाकर स्नान, सन्ध्या आदि तपस्या के द्वारा भगवान् विष्णु की आराधना करते थे।

द्वाविंशः श्लोकः

अस्तौषीद्धंसगुह्येन भगवन्तमधोक्षजम् ।
तुभ्यं तदभिधास्यामि कस्यातुष्यद् यतो हरिः ॥२२॥

पदच्छेद—

अस्तौषीत् हंस गुह्येन भगवन्तम् अधोक्षजम् ।
तुभ्यम् तद् अभिधास्यामि कस्य अतुष्यद् यतः हरिः ॥

शब्दार्थ

अस्तौषीत्	५. स्तुति की	तुभ्यम्	८. तुम्हें
हंस	२. हंस	तद्	९. उस स्तुति को
गुह्येन	३. गुह्य नाम के स्तोत्र	अभिधास्यामि	१०. सुनाता हूँ
भगवन्तम्	४. भगवान् की	कस्य अतुष्यद्	७. उन पर प्रसन्न हुये थे
अधोक्षजम् ।	१. दक्ष प्रजापति ने	यतः हरिः ॥	६. जिससे भगवान् श्री हरि

श्लोकार्थ—दक्ष प्रजापति ने हंस गुह्य नाम के स्तोत्र से भगवान् की स्तुति की जिससे भगवान् श्रीहरि उन पर प्रसन्न हुये थे। तुम्हें उस स्तुति को सुनाता हूँ।

त्रयोविंशः श्लोकः

प्रजापतिरुवाच—

नमः परायावितथानुभूतये गुणत्रयाभासनिमित्तबन्धवे ।
अदृष्टधाम्ने गुणतत्त्वबुद्धिभिर्निवृत्तमानाय दधे स्वयम्भुवे ॥२३॥

पदच्छेद--

नमः पराय अवितथ अनुभूतये गुणत्रय आभास निमित्त बन्धवे ।
अदृष्ट धाम्ने गुणतत्त्व बुद्धिभिः निवृत्तमानाय दधे स्वयम्भुवे ॥

शब्दार्थ—

नमः	१६. नमस्कार है	अदृष्ट	११. न देखे गये
परायअवितथ	१. प्रकृति से परे सत्य	धाम्ने	१२. स्वरूप वाले
अनुभूतये	२. अनुभूति वाले हैं	गुण	८. गुण
गुण	४. गुणों से युक्त	तत्त्व	९. तत्त्व और
त्रय	३. तीनों	बुद्धिभिः	१०. बुद्धि के द्वारा
आभास	७. भासित होनें वाले	निवृत्तमानाय	१३. अवधि और सीमा से रहित
निमित्त	६. कारण	दधे	१५. धारण करने वाले भगवान् को
बन्धवे ।	५. सृष्टि के	स्वयम्भुवे ॥	१४. स्वयम् प्रकाश को

श्लोकार्थहे--- भगवन् ! आप प्रकृति से परे सत्य अनुभूति वाले हैं। तीनों गुणों से युक्त सृष्टि के कारण भासित होंने वाले गुण-तत्त्व और बुद्धि के द्वारा न देख गये स्वरूप वाले, अवधि और सीमा से रहित, स्वयम् प्रकाश को धारण करने वाले भगवान् को नमस्कार है।

चतुर्विंशः श्लोकः

न यस्य सख्यं पुरुषोऽवैति सख्युः सखा वसन् संवसतः पुरेऽस्मिन् ।
गुणः यथा गुणिनः व्यक्तदृष्टेस्तस्मै महेशाय नमः करोमि ॥२४॥

पदच्छेद--

न यस्य सख्यम् पुरुषः अवैति सख्युः सखा वसन् संवसतः पुरे अस्मिन् ।
गुणः यथा गुणिनः व्यक्त दृष्टेः तस्मै महेशाय नमः करोमि ॥

शब्दार्थ—

न	३. नहीं	पुरे	७. शरीर में
यस्य सख्यम्	१. जिसके सख्य भाव को	अस्मिन् ।	६. इस
पुरुषः	२. जीव	गुणः	१२. गुण को
अवैति	४. जानता है	यथा गुणिनः	११. जैसे गुणी व्यक्ति
सख्युः	५. जीवों के	व्यक्त दृष्टेः	१३. स्पष्ट ही देखता है
सखा	८. मित्र रूप से	तस्मै	१४. उस
वसन्	१०. निवास करते हैं	महेशाय	१५. महेश्वर को
संवसतः	९. इकट्ठे होकर	नमः करोमि ॥	१६. नमस्कार करता हूं

श्लोकार्थ—जिसके सख्य भाव को जीव नहीं जानता है। जो जीवों के इस शरीर में मित्र रूप से इकट्ठे होकर निवास करते हैं जैसे गुणी व्यक्ति गुण को स्पष्ट ही देखता है। उस महेश्वर को नमस्कार करता हूं।

पंचविंशः श्लोकः

देहोऽसवोऽक्षा मनवो भूतमात्रा नात्मानमन्यं च विदुः परंयत् ।
सर्वं पुमान् वेद गुणांश्च तज्ज्ञो न वेद सर्वज्ञमनन्तमीडे ॥२५॥

पदच्छेद—

देहः असवः अक्षाः मनवः भूतमात्राः न आत्मानम् अन्यम् च विदुः परं यत् ।
सर्वम् पुमान् वेद गुणान् च तज्ज्ञः न वेद सर्वज्ञम् अनन्तम् ईडे ॥

शब्दार्थ—

देहः असवः	१. शरीर प्राण	सर्वम्	१३. सभी
अक्षाः	२. आँखें	पुमान्	११. मनुष्य
मनवः	३. अन्तः करण	वेद	१४. जानता है
भूतमात्राः	४. पञ्चमहाभूत और पञ्चतन्मात्रा आदि	गुणान्	१२. इनके गुणों को
न	८. नहीं	च	१५. और
आत्मानम्	५. अपने को	तज्ज्ञः	१६. उसके कारण को
अन्यम्	७. दूसरे को	न वेद	१७. नहीं ज न सकता है (उस)
च	६. और	सर्वज्ञम्	१८. सर्वज्ञ और
विदुः	९. जानते हैं	अनन्तम्	१९. अनन्त की
परंयत् ।	१०. परन्तु	ईडे ॥	२०. मैं स्तुति करता हूँ

श्लोकार्थ—शरीर, प्राण, आँखें, अन्तःकरण, पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्रा आदि अपने को और दूसरे को नहीं जानते हैं। परन्तु मनुष्य इनके सभी गुणों को जानता है और उसके कारण को नहीं जान सकता है। उस सर्वज्ञ और अनन्त की मैं स्तुति करता हूँ।

षड्विंशः श्लोकः

यदोपरामो मनसो नामरूपरूपस्य दृष्टस्मृतिसम्प्रमोषात् ।
य ईयते केवलया स्वसंस्थया हंसाय तस्मै शुचिसद्मने नमः ॥२६॥

पदच्छेद

यदा उपरामः मनसः नाम रूप रूपस्य दृष्टस्मृति सम्प्रमोषात् ।
यः ईयते केवलया स्वसंस्थया हंसाय तस्मै शुचि सद्मने नमः ॥

शब्दार्थ

यदा	१. जब	यः ईयते	१०. जो प्रकाशित होता है
उपरामः	७. उपरत हो जाता है (तब)	केवलया	८. केवल
मनसः	६. मन का	स्वसंस्थया	९. अपनी रूप स्थिति से
नाम रूप	४. नाम रूप वाले	हंसाय	१३. भगवान् को
रूपस्य	५. जगत् का निरूपण करने वाले	तस्मै	१२. उस
दृष्ट स्मृति	२. दृष्टि और स्मरण शक्ति का	शुचि सद्मने	११. पवित्र हृदय रूपी मन्दिर वाले
सम्प्रमोषात् ।	३. लोप हो जाने से	नमः ॥	१४. नमस्कार है

श्लोकार्थ—जब दृष्टि और स्मरण शक्ति का लोप हो जाने से नाम रूप वाले जगत् का निरूपण करने वाला मन उपरत हो जाता है तब केवल अपनी रूप स्थिति से जो प्रकाशित होता है, पवित्र हृदय रूपी मन्दिर वाले उस भगवान् को नमस्कार है।

सप्तविंशः श्लोकः

मनीषिणोऽन्तर्हृदि संनिवेशितं स्वशक्तिभिर्नवभिश्च त्रिवृद्भिः ।
वह्निं यथा दारुणि पाञ्चदश्यं मनीषया निष्कर्षन्ति गूढम् ॥२७॥

पदच्छेद---

मनीषिणः अन्तः हृदि संनिवेशितम् स्वशक्तिभिः नवभिः च त्रिवृद्भिः ।
वह्निम् यथा दारुणि पाञ्चदश्यम् मनीषया निष्कर्षन्ति गूढम् ॥

शब्दार्थ—

मनीषिणः	६. मनीषी लोग	वह्निम	३. अग्नि को
अन्तः	७. अन्तर्	यथा	१. जिस प्रकार
हृदि	८. हृदय में	दारुणि	२. लकड़ी में स्थित
संनिवेशितम्	९. स्थित	पाञ्च	४. पन्द्रह
स्वशक्तिभि	१३. शक्तियों में	दश्यम्	५. मन्त्रों के द्वारा प्रकट करते हैं वैसे ही
नव भः	१०. नौ का	मनीषया	१५. बुद्धि से (आपको)
च	१२. अर्थात् सत्ताईस	निष्कर्षन्ति	१६. खोजते हैं
त्रिवृद्भिः ।	११. तीन-गुना	गूढम ॥	१४. छिपे हुये

श्लोकार्थ---जिस प्रकार याज्ञिक लोग लकड़ा में स्थित अग्नि को पन्द्रह मन्त्रों के द्वारा प्रकट करते हैं, वैसे ही मनीषी लोग अन्तर् हृदय में स्थित नौ का तीन गुना अर्थात् सत्ताईस शक्तियों में छिपे हुये अपनी बुद्धि से आपको खोजत हैं।

अष्टाविंशः श्लोकः

स वै ममाशेषविशेषमाया निषेधनिर्वाणसुखानुभूतिः । ।
स सर्वनामा स च विश्वरूपः प्रसीदतामनिरुक्तात्मशक्तिः ॥२८॥

पदच्छेद—

सः वै मम अशेष माया निषेध निर्वाण सुख अनुभूतिः ।
सः सर्वनामा सः च विश्वरूपः प्रसीदताम् अनिरुक्त आत्म शक्तिः ॥

शब्दार्थ—

सः	१४. वह आप	सः	१०. स्थित हैं
वै	१३. निश्चित ही	सर्वनामा	७. सारे नामों वाले
मम	१५ मुझ पर	स	६. वह भगवान्
अशेष	१. सम्पूर्ण रूप से	च	८. और
विशेष माया	२. विशेष माया का	विश्वरूपः	९. वे सारे रूपों में
निषेध	३. निषेध कर देने पर	प्रसीदताम्	१६. प्रसन्न हो
निर्वाण सुख	४. मोक्ष के सुख की	अनिरुक्त	१२. निर्वचन नहीं हो सकता
अनुभूतिः ।	५. अनुभूति होती है	आत्म शक्तिः ॥	११. आप की शक्ति का

श्लोकार्थ---सम्पूर्ण रूप से विशेष माया का निषेध कर देने पर मोक्ष के सुख की अनुभूति होती है। वह भगवान् सारे नामों वाले और सारे रूपों में (स्थित) हैं। आपकी शक्ति का निर्वचन नहीं हो सकता। निश्चित ही वह आप मुझ पर प्रसन्न हों।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यद्यन्निरुक्तं वचसा निरूपितं धियाक्षभिर्वा मनसा वोत यस्य ।
मा भूत् स्वरूपं गुणरूपं हि तत्तत् स वै गुणापायविसर्गलक्षणः ।।२९।।

पदच्छेद—

यत् यत् निरुक्तम्, वचसा निरूपितम्, धिया अक्षभिः वा मनसा वा उत यस्य ।
मा भूत् स्वरूपम् गुण रूपम् हि तत् तत सः वै गुण अपाय विसर्ग लक्षणः ।।

शब्दार्थ---

यत् यत्	१. जो कुछ	मा	१३. नहीं
निरुक्तम्	३. कहा जाता है	भूत्	१४. हो सकता
वचसा	२. वाणी से	स्वरूपम्	१२. आपका स्वरूप
निरूपितम्	१०. जाना जाता है	गुण रूपम्	१६. गुण रूप है (और आप तो)
धिया	५. बुद्धि से	हि तत् तत्	१५. क्योंकि वह तो
अक्षभिः	७. इन्द्रियों से	सः वै	११. वह निश्चित ही
वा	६. अथवा	गुण	१७. गुणों के
मनसा	९. मन से	अपाय	१८. प्रलय और
वा उत	८. अथवा	विसर्ग	१९. उत्पत्ति के
यस्य ।	४. जिसको	लक्षणः ।।	२०. स्थान हैं

श्लोकार्थ— जो कुछ वाणी से कहा जाता है जिसको बुद्धि से अथवा इन्द्रियों से अथवा मन से जाना जाता है, वह निश्चित ही आपका स्वरूप नहीं हो सकता। क्योंकि वह तो गुण रूप है, और आप तो गुणों के प्रलय और उत्पत्ति के स्थान हैं।

त्रिंशः श्लोकः

यस्मिन् यतो येन च यस्य यस्मै यद् यो यथा कुरुते कार्यते च ।
परावरेषां परमं प्राक् प्रसिद्धं तद् ब्रह्म तद्धेतुरनन्यदेकम् ।।३०।।

पदच्छेद—

यस्मिन् यतः येन च यस्य यस्मै यद् यः यथा कुरुते कार्यते च ।
पर अवर एषाम् परमम् प्राक् प्रसिद्धम् तद ब्रह्म तत हेतुः अन्यत् एकम् ।।

शब्दार्थ

यस्मिन्	१. जिसमें	पर	१०. कार्य और
यतः	२. जिससे	अवर	११. कारण (से रहित)
येन	४. जिसके द्वारा	एषाम्	१२. इसके
च	३. और	परमम्	१४. श्रेष्ठ
यस्य यस्मै	५. जिसका जिसके लिये	प्राक्	१३. पहले
यद् यः	६. जो यह संसार है उसका	प्रसिद्धम्	१५. स्वयं सिद्ध स्वरूप से
यथा कुरुते	७. जिस प्रकार से निर्माण करते हैं	तद् ब्रह्म	१८. उस ब्रह्म को (नमस्कार है)
कार्यते	९. कराते हैं (जो)	तत् हेतुः	१६. इस संसार के कारण
च ।	८. और	अन्यत् एकम् ।।	१७. अद्वितीय एक

श्लोकार्थ—जिसमें, जिससे और जिसके द्वारा, जिसका, जिसके लिये जो यह संसार है, उसका जिस प्रकार से निर्माण करते और कराते हैं, जो कार्य और कारण से रहित हैं। इसके पहले, श्रेष्ठ, स्वयम् सिद्ध स्वरूप से इस संसार के कारण, अद्वितीय, एक, उस ब्रह्म को नमस्कार है।

एकत्रिंशः श्लोकः

यच्छक्तयो वदतां वादिनां वै विवादसंवादभुवो भवन्ति ।
कुर्वन्ति चैषां मुहुरात्ममोहं तस्मै नमोऽनन्तगुणाय भूम्ने ॥३१॥

पदच्छेद—

यत् शक्तयः वदताम् वादिनाम् वै विवाद संवाद भुवः भवन्ति ।
कुर्वन्ति च एषाम् मुहुः आत्म मोहम् तस्मै नमः अनन्त गुणाय भूम्ने ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जो आपकी	कुर्वन्ति	१४. कर लेती है
शक्तयः	२. शक्तियाँ	च	१०. और
वदताम्	४. वादी	एषाम्	११. वे
वादिनाम्	५. प्रतिवादियों के	मुहुः	१२. बार-बार
वै	३. निश्चित ही	आत्म मोहम्	१३. अपने मोह में
विवाद	६. विवाद और	तस्मै	१५. उस
संवाद	७. संवाद का	नमः	१८. नमस्कार
भुवः	८. विषय	अनन्त गुणाय	१६. अनन्त गुणों वाले
भवन्ति ।	९. होती है	भूम्ने ॥	१७. भगवान् को

श्लोकार्थ— जो आपकी शक्तियाँ निश्चित ही वादी प्रतिवादियों के संवाद का विषय होती हैं और ये बार-बार अपने मोह में कर लेती हैं उस अनन्त गुणों वाले भगवान् को नमस्कार है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

अस्तीति नास्तीति च वस्तुनिष्ठयोरेकस्थयोर्भिन्नविरुद्धधर्मयोः ।
अवेक्षितं किञ्चन योगसांख्ययोः समं परं ह्यनुकुलं बृहत्तत् ॥३२॥

पदच्छेद---

अस्ति इति न अस्ति इति च वस्तुनिष्ठयोः एकस्थयोः भिन्न विरुद्ध धर्मयोः ।
अवेक्षितम् किञ्चन योग सांख्ययोः समम् परम् हि अनुकूलम् बृहत् तत् ॥

शब्दार्थ---

अस्ति इति	८. ऐसा कहते हैं	अवेक्षितम्	१०. देखते हैं (और)
न	११. नहीं है	किञ्चन	५. कुछ
अस्ति	८. हैं	योग	६. योग वाले भगवान् को
इति	१२. इस प्रकार कहते हैं	सांख्ययोः	९. सांख्य योग वाले शरीर से युक्त
च	१०. और	समम्	१६. समान
वस्तु निष्ठयोः	७. शरीर से युक्त	परम्	१७. श्रेष्ठ और
एकस्थयोः	१. एक वस्तु में स्थित	हि	१३. किन्तु
भिन्न	२. अलग-अलग	अनुकूलम्	१५. अनुकूल
विरुद्ध	३. विरोधी	बृहत्	१८. व्यापक हैं
धर्मयोः ।	४. दो धर्म हैं	तत् ॥	१४. आप

श्लोकार्थ— एक वस्तु में स्थित अलग-अलग विरोधी दो धर्म हैं। कुछ योग वाले भगवान् को शरीर से युक्त ऐसा कहते हैं। और सांख्य योग वाले शरीर से युक्त देखते हैं और नहीं हैं इस प्रकार कहते हैं। किन्तु आप अनुकूल, समान, श्रेष्ठ और व्यापक हैं।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

योऽनुग्रहार्थं भजतां पादमूलमनामरूपो भगवाननन्तः ।
नामानि रूपाणि च जन्मकर्मभिर्भेजे स मह्यं परमः प्रसीदतु ॥

पदच्छेद---

यः अनुग्रहार्थम् भजताम् पाद मूलम् अनाम रूपः भगवान् अनन्तः ।
नामानि रूपाणि च जन्म कर्मभिः भेजे सः महयम् परमः प्रसीदतु ॥

शब्दार्थ---

यः	१. जो मनुष्य	नामानि	१२. अनेक नामों
अनुग्रहार्थम्	२. अनुग्रह के लिये आपके	रूपाणि	१४. अनेक रूपों को
भजताम्	५. भजन करते हैं	च	१३. और
पाद्	३. चरण	जन्म	८. जन्म लेकर
मूलम्	४. कमल का	कर्मभिः	९. कर्मो के द्वारा
अनाम	६. नाम रहित	भेजे	१५. धारण करते हैं
रूपः	७. रूप रहित	सः महयम्	१६. वह भगवान् मुझ पर
भगवान्	१०. भगवान्	परमः	१७. अत्यधिक
अनन्तः ।	११. अनन्त	प्रसीदतु ॥	१८. प्रसन्न हों

श्लोकार्थ---जो मनुष्य अनुग्रह के लिये आपके चरण कमल का भजन करते हैं। नाम-रहित रूपरहित (स्वयं) जन्म लेकर कर्मों के द्वारा भगवान् अनन्त अनेक नामों और अनेक रूपों को धारण करते हैं, वह भगवान् मुझ पर अत्यधिक प्रसन्न हों।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यः प्राकृतैर्ज्ञानपथैर्जनानां यथाशयं देहगतो विभाति ।
यथानिलः पार्थिवमाश्रितो गुणं स ईश्वरो मे कुरुतान्मनोरथम् ॥

पदच्छेद---

यः प्राकृतैः ज्ञान पथैः जनानाम् यथा आशयम् देह गतः विभाति ।
यथा अनिलः पार्थिवम् आश्रितः गुणम् सः ईश्वरः मे कुरुतात् मनोरथम् ॥

शब्दार्थ---

यः	४. जो (ईश्वर)	यथा	१०. जिस प्रकार
प्राकृतैः	२. साधारण	अनिल	११. वायु
ज्ञान पथैः	३. ज्ञान मार्ग के द्वारा	पार्थिवम्	१२. गन्ध का
जनानाम्	१. लोगों को	आश्रितः	१३. आश्रय लेकर
यथा	६. अनुसार	गुणम्	१४. सुगन्धित होती है
आशयम्	५. उनकी भावना के	सः ईश्वरः	१५. वह ईश्वर
देह	७. हृदय में	मे	१६. मेरे
गतः	८. स्थित होकर	कुरुतात्	१८. पूर्ण करें
विभाति ।	९. प्रतीत होता है	मनोरथम् ॥	१७. मनोरथ को

श्लोकार्थ— लोगों को साधारण ज्ञान मार्ग के द्वारा जो ईश्वर उनकी भावना के अनुसार हृदय में स्थित होकर उसी प्रकार प्रतीत होता है जिस प्रकार वायु गन्ध का आश्रय लेकर सुगन्धित होता है॥ वह मेरे मनोरथों को पूर्ण करें।

पंचत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच

इति स्तुतः संस्तुवतः स तस्मिन्नघमर्षणे ।
आविरासीत् कुरुश्रेष्ठ भगवान् भक्तवत्सलः ॥३५॥

पदच्छेद—

इति स्तुतः संस्तुवतः सः तस्मिन् अघमर्षणे ।
आविरासीत् कुरुश्रेष्ठ भगवान् भक्त वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

इति स्तुतः	५. इस प्रकार के स्तोत्र से	आविरासीत्	१०. सामने प्रकट हुये
संस्तुवतः	६. स्तुति की (तब)	कुरुश्रेष्ठ	१. हे परीक्षित् !
सः	४. प्रजापति दक्ष ने	भगवान्	९. भगवान् (उनके)
तस्मिन्	२. उस	भक्त	७. भक्त
अघमर्षणे ।	३. अघमर्षण तीर्थ में (जब)	वत्सलः ॥	८. वत्सल

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस अघमर्षण तीर्थ में जब प्रजापति दक्ष नें इस प्रकार के (हंस गुह्यनामक) स्तोत्र से स्तुति की तब भक्त वत्सल भगवान् उनके सामने प्रकट हुये ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

कृतपादः सुपर्णांसे प्रलम्बाष्टमहाभुजः ।
चक्रशङ्खासिचर्मेषुधनुःपाशगदाधरः ॥३६॥

पदच्छेद—

कृत पादः सुपर्ण अंसे प्रलम्ब अष्ट महाभुजः ।
चक्र शङ्ख असि चर्म इषु धनुः पाश गदाधरः ॥

शब्दार्थ—

कृत	४. रक्खे थे (अपनी)	चक्र	८. चक्र
पादः	३. चरण को	शङ्ख	९. शंख
सुपर्ण	१. (वह भगवान्) गरुड़ के	असि	१०. तलवार
अंसे	२. कन्धे पर	चर्म इषु	११. ढाल-बाण
प्रलम्ब	५. विशाल	धनुः	१२. धनुष
अष्ट	६. आठ	पाश	१३. पाश और
महाभुजः ।	७. बड़ी भुजाओं में	गदाधरः ॥	१४. गदा धारण किये थे ।

श्लोकार्थ—वह भगवान् गरुड़ के कन्धे पर चरण को रखे हुए थे । अपनी विशाल आठ बड़ी भुजाओं में चक्र, शंख, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और गदा धारण किये थे ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

पतिवासा घनश्यामः प्रसन्नवदनेक्षणः ।
वनमालानिवीताङ्गो लसच्छ्रीवत्सकौस्तुभः ॥३७॥

पदच्छेद—

पतिवासाः घनश्यामः प्रसन्न वदन ईक्षणः ।
वनमाला निवीतअङ्गः लसत् श्रीवत्स कौस्तुभः ॥

शब्दार्थ—

पतिवासाः	१. पीताम्बरधारी	**वनमाला**	७. वनमाला (तथा)
घनश्यामः	२. बादल के समान श्यामल	**निवीताङ्गः**	६. घुटनों तक की
प्रसन्न	३. प्रसन्न	**लसत्**	१०. सुशोभित हो रही थी
वदन	४. मुख मण्डल और	**श्रीवत्स**	८. श्रीवत्स और
ईक्षणः ।	५. नेत्र वाले भगवान् की	**कौस्तुभः ॥**	९. कौस्तुभ मणि

श्लोकार्थ— पीताम्बरधारी के समान श्यामल, प्रसन्न, मुखमण्डल और नेत्र वाले भगवान् की घुटनों तक की वनमाला तथा श्रीवत्स और कौस्तुभ मणि सुशोभित हो रही थी।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

महाकिरीटकटकः स्फुरन्मकरकुण्डलः ।
काञ्च्यङ्गुलीयवलयनूपुराङ्गदभूषितः ॥३८॥

पदच्छेद—

महाकिरीट कटकः स्फुरन् मकर कुण्डलः ।
काञ्ची अंगुलीय वलय नूपुर अङ्गद भूषितः ॥

शब्दार्थ—

महाकिरीट	१. बहुमूल्य किरीट	**काञ्ची**	६. करधनी
कटकः	२. कङ्कन और	**अंगुलीय**	७. अंगूठी
स्फुरन्	५. सुशोभित हो रहे थे (तथा)	**वलय**	८. कड़े
मकर	३. मकर की आकृति के	**नूपुर अङ्गद**	९. पायजेब और बाजूबन्द
कुण्डलः ।	४. कुण्डल	**भूषितः ॥**	१०. सुशोभित थे

श्लोकार्थ— बहुमूल्य किरीट, कङ्कन और मकर की आकृति के कुण्डल सुशोभित हो रहे थे तथा करधनी, अंगूठी, कड़े, पायजेब और बाजूबन्द सुशोभित थे।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

त्रैलोक्यमोहनं रूपं बिभ्रत् त्रिभुवनेश्वरः ।
वृतो नारदनन्दाद्यैः पार्षदैः सूरयूथपैः ॥३९॥

पदच्छेद—

त्रैलोक्य मोहनम् रूपम् बिभ्रत् त्रिभुवनईश्वरः ।
वृतः नारद नन्द आद्यैः पार्षदैः सुर यूथपैः ॥

शब्दार्थ—

त्रैलोक्य	२. तीनों लोकों को	वृतः	१०. घिरे हुये थे
मोहनम्	३. मोहित करने वाला	नारद नन्द	६. नारद नन्द
रूपम्	४. रूप	आद्यैः	७. आदि
बिभ्रत्	५. धारण किया था (वे)	पार्षदैः	८. पार्षदों से (तथा)
त्रिभुवनईश्वरः ।	१. त्रिभुवन के स्वामी भगवान् ने	सुर यूथपैः ॥	९. देव गणों से

श्लोकार्थ—त्रिभुवन के स्वामी भगवान् ने तीनों लोको को मोहित करने वाला रूप धारण किया था। नारद-नन्द आदि पार्षदों से तथा देवगणों से घिरे हुये थे।

चत्वारिंशः श्लोकः

स्तूयमानोऽनुगायद्भिः सिद्धगन्धर्वचारणैः ।
रूपं तन्महदाश्चर्यं विचक्ष्यागतसाध्वसः ॥४०॥

पदच्छेद—

स्तूयमानः अनुगायद्भिः सिद्ध गन्धर्व चारणैः ।
रूपम् तत् महद् आश्चर्यम् विचक्ष्य आगत साध्वसः ॥

शब्दार्थ—

स्तूयमानः	५. स्तुति कर रहे थे तथा	तद्	९. उनके
अनुगायद्भिः	६. गुणों का गान कर रहे थे	महद्	७. अत्यधिक
सिद्ध	१. सिद्ध	आश्चर्यम्	८. आश्चर्यमय
गन्धर्व	२. गन्धर्व और	विचक्ष्य	११. देखकर (वे दक्ष)
चारणैः	३. चारणादि	आगत	४. आये हुये भगवान् की
रूपम् ।	१०. रूप को	साध्वसः ॥	१२. सहम गये

श्लोकार्थ—सिद्ध, गन्धर्व और चारणादि आये हुये भगवान् की स्तुति तथा गुणों का गान कर रहे थे। इस प्रकार अत्यधिक आश्चर्यमय उनके रूप को देखकर वे दक्ष सहम गये।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

ननाम दण्डवद् भूमौ प्रहृष्टात्मा प्रजापतिः ।
न किञ्चनोदीरयितुमशकत् तीव्रया मुदा ।
आपूरितमनोद्वारैर्ह्रदिन्य इव निर्झरैः ॥४१॥

पदच्छेद—

ननाम दण्डवत् भूमौ प्रहृष्टात्मा प्रजापतिः ।
न किञ्चन उद्ईरयितुम् अशकत् तीव्रया मुदा ।
आपूरित मनोद्वारैः ह्रदिन्यः इव निर्झरैः ॥

शब्दार्थ—

ननाम	५. प्रणाम किया	अशकत्	९. समर्थ हो सके
दण्डवत्	४. दण्डवत्	तीव्रया मुदा	६. अत्यधिक प्रसन्नता के कारण
भूमौ	३. पृथिवी में	आपूरित	११. भर गई
प्रहृष्टात्मा	२. प्रसन्न मन से	मनोद्वारैः	१०. उनकी इन्द्रियाँ
प्रजापतिः ।	१. प्रजापति दक्ष ने	ह्रदिन्यः	१४. नदियाँ भर जाती हैं
न	८. नहीं	इव	१२. जैसे
किञ्चन उद्ईरयितुम्	७. कुछ भी कहने में	निर्झरैः ॥	१३. झरनों के जल से

श्लोकार्थ—प्रजापति दक्ष ने प्रसन्न मन से पृथिवी में दण्डवत् प्रणाम किया। (वे) अत्यधिक प्रसन्नता के कारण कुछ भी कहने में समर्थ नहीं हो सके। उनकी इन्द्रियाँ भर गईं। जैसे झरनों के जल से नदियां भर जाती हैं।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तं तथावनतं भक्तं प्रजाकामं प्रजापतिम् ।
चित्तज्ञः सर्वभूतानामिदमाह जनार्दनः ॥४२॥

पदच्छेद—

तम् तथा अवनतम् भक्तम् प्रजाकामम् प्रजापतिम् ।
चितज्ञः सर्वभूतानान् इदम् आह जनार्दनः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उस	चित्तज्ञः	६. हृदय की बात जानने वाले
तथा अवनतम्	५. उस प्रकार झुके हुये (देखकर)	सव	८. सम्पूर्ण
भक्तम्	२. अपने भक्त	भूतानाम्	७. प्राणियों के
प्रजाकामम्	१. प्रजा की वृद्धि की इच्छा वाले	इदम् आह	१०. इस प्रकार कहा
प्रजापतिम् ।	४. प्रजापति दक्ष को	जनार्दनः ॥	९. भगवान् ने

श्लोकार्थ—प्रजा की वृद्धि की इच्छा वाले अपने भक्त उस प्रजापति दक्ष को उस प्रकार झुके हुये देखकर सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय की बात जानने वाले भगवान् ने इस प्रकार कहा।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच

प्राचेतस महाभाग संसिद्धस्तपसा भवान् ।
यच्छ्रद्धया मत्परया मयि भावं परं गतः ॥४३॥

पदच्छेद—

प्राचेतस महाभाग संसिद्धः तपसा भवान् ।
यत् श्रद्धया मत्परया मयि भावम् परम् गतः ॥

शब्दार्थ—

प्राचेतस	२. दक्ष	यत् श्रद्धया	६. जो कि श्रद्धा से
महाभाग	१. हे महाभाग्यवान् !	मत्परया मयि	७. मेरे प्रति तुम्हारे हृदय में
संसिद्धः	५. सिद्ध हो गई	भावम्	९. प्रेम-भाव
तपसा	४. तपस्या	परम्	८. अधिक
भवान् ।	३. आपकी	गतः ॥	१०. उदय हो गया है

श्लोकार्थ—हे महाभाग्यवान् दक्ष ! आपकी तपस्या सिद्ध हो गई। जो कि श्रद्धा से मेरे प्रति तुम्हारे हृदय में अधिक प्रेम-भाव उदय हो गया है।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

प्रीतोऽहं ते प्रजानाथ यत्तेऽस्योद्बृहणं तपः ।
ममैष कामो भूतानां यद् भूयासुर्विभूतयः ॥४४॥

पदच्छेद—

प्रीतः अहम् ते प्रजानाथ यत् ते अस्य उद्बृहणम् तपः ।
मम एषः कामः भूतानाम् यद् भूयासुः विभूतयः ॥

शब्दार्थ—

प्रीतः	३. प्रसन्न हूँ	मम	८. मेरी
अहम् ते	२. मैं तुम पर	एषः	९. यह
प्रजानाथ	१. हे प्रजापति ! दक्ष	कामः	१०. कामना है
यत्-ते	४. जो तुमने	भूतानाम्	१२. समस्त प्राणियों की
अस्य	५. इस संसार की	यद्	११. की
उद्बृंहणम्	६. वृद्धि के लिये	भूयासुः	१३. अभिवृद्धि हो
तपः ।	७. तपस्या की है	विभूतयः ॥	१४. और समृद्धि हो

श्लोकार्थ—हे प्रजापति दक्ष ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। जो तुमने इस संसार की वृद्धि के लिए तपस्या की है। मेरी यह कामना है कि समस्त प्राणियों की अभिवृद्धि और समृद्धि हो।